

आवनीकर्म

कशागुसमत्रपिस्थापयथाततोआचमनंद
धार॥ संकेत्य॥ ॐ अथस्नानवराहकेत्यथादि
देशकोलोचस्मृत्यो॥ ॐ तत्सत्॥ अस्मिन्
वाणीकर्मसम्भूतकलशाद्येनादिचरषिपूजे
नमस्कृतिरिष्ये॥ इति संकेत्य॥ पुष्पभाजन
समर्पयामि॥ सिद्धिरस्तुत्रियारंभेति॥ तथा
वातेति॥ पुष्पभाजनं समर्पयामि नमः॥ आ
नंकारयत्॥ ॐ स्वस्ति न इन्द्रो॥ दुग्ध॥ ॐ पयः
पृथिव्या॥ दधि॥ ॐ दधि काव्यो॥ मधु॥ ॐ मः
शुक्ला॥ घृत॥ ॐ घृतघृतपावानेः॥ सर्करा॥
ॐ नमः सम्भवाय च॥ पुनः जलस्नान॥ ॐ पवि

[illegible][illegible]

शिवकश्यपावयमेववशिष्टोचकश्यपोवागेवात्रि
 कश्यपमयतितिवैनामेतद्यद्विरितिसर्वः
 स्यान्नाभवतिसर्वस्यांतभवति॥३॥
 कारवस्मृषिगायत्रीकन्दोऽग्निर्देवताभूक्तोव
 र्मस्सर्वकर्मरम्भेविनियोगः॥३॥दोमित्रस्वयः
 म्भद्रनिगायत्रीकन्दोऽग्निर्देवताकोकैवद्या
 हतीधारणीविनियोगः॥३॥आहतीनाम्भजापति
 ऋषिगायत्रीरुमिगतुष्टुवृहतीपंक्तोत्रिष्टुभः
 गायत्र्यदोऽग्निनाद्यादित्यवृहस्पतिर्वरुणो
 नुविश्वदेवतादिष्टप्रायश्चित्तेप्राणायामेविनि

२

योगः॥३॥गायत्र्याविश्वामित्रऋषिगायत्रीकन्दःस
 वितादेवतागायत्रीजपेविनियोगः॥३॥आदिकंका
 लाद्वाराचनम्॥३॥तत्त्वयामि॥३॥देवस्यत्वा॥
 ३॥गणानात्वा॥३॥वृहस्पतेऽअति॥३॥चत्वारि
 श्रं॥३॥द्वारोदेवी॥३॥हिरण्यगर्भ॥३॥सप्तऽ
 नेष्टयः॥३॥वृहजज्ञानं॥३॥विष्णोररात॥३॥
 नमःशम्भवा॥आवाहनादिद्वाराचनविधेतर
 सर्वपरिपूर्णम्॥३॥विष्णुजनं॥३॥जोतुर्म
 यनमः॥३॥नुचितसहोजाअमृतानितुन्दतेहो
 तायदूतोअभयेदिवश्वतः॥३॥विसाविष्टेभिः

पथिभीरजोममआदेवताताहविषाविवामसि
ॐ भारद्वाजाय ॥ ॐ त्वसामासि चारयुर्मदुओ
जिष्ठाअचरे ॥ पवसेमंहयडशिः ॥ ॐ विश्वा
मित्राय ॥ ॐ इमेभोजाअंतिरसोविरुपा
दिवष्पुत्रासोअश्वरस्यवीराः ॥ विश्वामित्रा
यददतोमद्यानिसहसावेप्रतिरंतआयुः
ॐ समदेवये ॥ ॐ गराताजमदग्निर्न
हृत्स्यसीदतपायंसोममृतावृक्षा ॥ ॐ वः
शिष्ठाय ॥ ॐ उतासिमिनीवरुणोवशिष्टोर्व
श्यावृहन्मनेसायिजानः ॥ इत्येकं नमस्कृत्य

लादेव्येनविश्वेदेवापुष्करेत्वादन्दत ॥ ॐ कश्यपाय ॥
ॐ शर्याणावतिसोममिन्द्रः पिवन्नवृत्तेहा ॥ वलद्व्या
नेआत्मनिकारिवनीर्यमहर्हिन्दोयेन्दोपरि
श्रवा ॥ ॐ अत्रये ॥ ॐ समिध्वान्तिन्दिवसोचतः
प्रापुपत्यउषसुत्रिद्याविभाति ॥ एविप्राचीविः
श्ववारमनेभिर्देवा ॥ इताताहविषावृतासति ॥
ॐ सप्तर्षिभ्यो ॥ ॐ सप्तर्षयः ॥ इत्ये
व्यपूजा ॥ कलशाचनं ॥ ॐ इममेगगे ॥ ॐ सि
तासिते ॥ ॐ सहस्रशीर्षा ॥ ॐ पञ्चनद्यः सरस्व
ती ॥ ॐ उपदूरेगिरि ॥ ॐ आजिपुवत्तदा ॥ पंच
वक्त्रपूजा ॥ ॐ सद्योजाताय ॥ सद्योजातायामि

मीतयत्तमाग्निदेवाभामभवत्पुरोगाः अस्य हो
 तः प्रदिश्यतस्य वाचि स्वाहा कृतं हवि रद नु देव
 ॥ ॐ वामदेवा य १ ॥ ॐ वाममम सवितर्वा म म २ ॥
 श्रो दिवे दिवे वाममम सवितर्वा म म ३ ॥
 यस्य देव भूर र याचि या वाम भा जः स्याम ॥ ॐ उ
 द्यो रा य १ ॥ ॐ या ते रुद्र शिवा ते नु ॥ ॐ ते त्पुरुषाः
 य १ ॥ ॐ या त्पुरुष व्या द ॥ ॐ ईशा नाय १ ॥ ॐ तमी
 शान्ते गते सत्पुष स्पति स्थि यज्जिन्य मवसे
 रु महे ह्य म ॥ पूषा ना स था वेद साम स ह्ये रः
 सि पा युर द वः ॥ स्य त्त ये ॥ चतुर्वेदा न न ॥ ॐ न
 जे दा य १ ॥ ॐ अग्निमीडे पुरो ॥ ॐ यजुर्वेदा य १ ॥

५

ॐ र्षे त्वो जेत्वा ॥ ॐ सामवेदा य १ ॥ ॐ अग्न आ य
 हि वी ॥ ॐ अथर्वणा वेदा य १ ॥ ॐ श नो देवी रभि ॥ य
 गा र्च नं ॥ ॐ सत्ये यु गा य १ ॥ ॐ त्रे ता यु गा य १ ॥ ॐ
 द्वा पर यु गा य १ ॥ ॐ क लि यु गा य १ ॥ ॐ अक्षरा
 जा य कि त वं क ता या दि न व द र्श त्रे ता ये क लि य नं
 द्वा प रा या यि क लि य न मा स्त न्दा य स भा स्था न
 म् त्म वे गो व्य ऋ म नो का य गो धा ना क्ष पे योः
 गां यि कृतं वि क्ष मा न उप ति ष ति दुष् क ता य च र
 का स म्पा प्म ने त्री र म् ॥ गृ हा र्च नं ॥ ॐ आ दि त्वा
 य १ ॥ सो मा य १ ॥ अं गा रा य १ ॥ दु धा य १ ॥ वृ ह त्प
 ते यो १ ॥ ॐ का य १ ॥ शानि श्वा य १ ॥ रा हु वे १ ॥ के

वे१॥ जन्मने१॥ ॐ आ० श्री० इ० दे० वा० अ० नि० मु० र्वा
 ॐ उ० छ० स्वा० गे० वृ० स्य० ते० अ० न्ना० त्परि० त्तु० शं० नो० दे० वी०
 ॐ क० या० न० चि० त्र० के० तु० कृ० ण० ता० अ० स्य० ॥ लो० क० या० ला०
 ॐ इ० न्द्रा० य० य० मा० य० नै० नृ० त्वा० य० वरु० णा० य० वा
 य० वे० कु० वे० रा० य० इ० श्रा० ना० य० वि० भ० वे० ब्र० ह्मः
 ॐ श्र० ॐ त्रा० तार० मि० न्द्र० अ० ग्नि० र्म० र्वा० अ० मे० न० द० तं
 स० नै० दे० वी० इ० म० म्मे० त० व० वा० पु० र० त० स्य० ते० कु० पि० दं
 अ० मि० त्वा० श्र० त्री० णि० प० दा० वृ० ह्म० ण० स्य० ते० चि० त्तं
 ॐ अ० श्व० त्वा० मा० य० व० ल० ये० वा० सा० य० इ०
 नु० म० ते० वि० भी० व० ना० य० कृ० पा० चो० र्या० य० प० र्शु० रा० मा० य०
 मा० र्क० णे० या० य० ॐ अ० श्व० त्वा० यो० म० ही० यो० य० स्य० ५

कु० र्मो० गृ० हे० ॐ ती० वा० न्यो० वा० ॐ र० क्ष० सा० म्भ्या० गो० मि० नि० र० त्त० दं
 र० क्ष० इ० दं० म० ह० र० क्षो० मि० ति० ष्टा० मी० दं० म० ह० र० क्षो० व० वा० य० इ०
 दं० म० ह० र० क्षो० ध० म० न० त० मो० न० या० मि० ॐ जे० न० या० वा० पृ० थि० वी०
 प्रा० ण० वा० धा० म्या० यो० वे० त्ता० का० ना० म० ग्नि० रा० ज्य० स्य० वे० त्तु० त्वाः
 हा० त्वा० हा० कृ० ते० उ० र्ध्वं० न० भ० स० म्भ्या० रु० त्तं० क० त० म० ॐ अ० य० दं०
 स० ह० सु० म० वि० मिः ॐ प्र० जा० प० ते० न० त्वे० ॐ स० म० नृ० ष० यः
 मा० सा० दि० ॐ मा० से० भ्यो० ॐ प० क्षा० भ्यां० ॐ ति० थि० भ्यो० ॐ न
 क्ष० त्रे० भ्यो० ॐ मु० ह० र्ते० भ्यो० ॐ पृ० थि० वे० ॐ क० र० णे० भ्यो० ॐ यो० गे०
 भ्यो० ॐ के० तु० भ्यो० ॐ स० म्य० त्स० रे० भ्यो० ॐ रा० शि० भ्यो० ॐ र० धा० य
 ॐ र० क्षा० य० ॐ या० रे० भ्यो० ॐ उ० च्चे० भ्र० वा० य० ॐ अ० रु० णा० य० ॐ कु
 मा० रा० य० ॐ म० ण० ॐ ला० य० ॐ ग० रु० ण० य० ॐ पु० भा० सो० य० ॐ न० दी

भ्यो२॥ रत्नगर्भाय२॥ विष्णवे२॥ रुद्राय२॥ ॐ अर्द्धमास
 अग्नेः पक्षति॥ ॐ इन्द्राग्न्याः पक्षतिः॥ ॐ नक्षत्रेभ्यः॥
 ॐ सुपर्णाः पाजन्त्यः॥ ॐ क्राणासि॥ ॐ श्रीमे श्रीमेतवस्त
 ॐ तेवस्ते॥ ॐ सम्यत्सरोसि॥ ॐ अश्वत्थपरोजो॥
 ॐ अयम्परो॥ ॐ ब्राह्मनासः॥ अश्विनातेजः॥ आमि
 न्देरिन्द्र॥ यत्रवाणाः॥ पञ्चनेत्रे॥ उपहरेगि॥ विभोक्
 र्माणि॥ नमः श्वभ्यः॥ आजिद्यु॥ चत्वारिभुं॥ स्वर्गा
 पूजा॥ ॐ दधिउमापतये२॥ दधि क्रीवाणो॥ दीर्घाद्यु
 त्थाय॥ त्यजेविष्टदा॥ याफलिनी॥ पञ्चवलि॥ गः
 णानात्वा॥ जातेवेदसे॥ इमारुद्राय॥ घृतप्लुत॥ नमो
 वेभूशाय॥ असंख्याता॥ अम्येअमिके॥ समख्यदे

६

जोगाशा॥ ॐ नमोगणोभ्यो॥ ॐ आयुर्दौः॥ जातेवेद
 से॥ सूर्यादि॥ श्रीसूर्याय२॥ नारायणा॥ सदाशि
 दा२॥ गुरुलक्ष्म्यै२॥ इष्टदेवताभ्यो२॥ ॐ आकृमि
 नर॥ विष्णोररात॥ नमः शम्भवाय॥ श्रीश्वते॥ वरु
 स्यते॥ श्रीलक्ष्मी॥ श्रीश्वे२॥ लक्ष्मी२॥ ॐ समिते
 संकेत्य॥ ॐ सम्भामना॥ श्रीश्वतेलक्ष्मी॥ चतुः
 स्वस्तिपयः पञ्च॥ स्वस्तिनन्दो॥ पयः पृथिव्या
 विष्णोररातमसि॥ अग्निर्देवता॥ द्यौः शान्ति॥
 पदीप॥ क्षरसि॥ तेजोसि॥ आरति॥ अग्निर्भ्यो
 तिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिः सूर्यः स्वा
 हा॥ अग्निर्ध्वो ज्योतिर्ध्वः स्वाहा सूर्यो ध्व

श्रीज्योतिः स्थाहा ॥ ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्थाहा
 वक्रां न नैवेद्यं ॥ अं अ नैवेद्यं ॥ फल ॥ या फलनी
 प्रतिष्ठा ॥ मनोजोति ॥ महात्मा ॥ जय ॥ १०८ ॥ स्तो
 त्र ॥ रत्नोष्धी ॥ गौतमश्च भारद्वाजो विश्वामित्रस्त
 थैव च ॥ यमदग्निर्वशिष्ठश्च कद्रयपश्चाच्चिरेत
 चे ॥ अयं स प्रथमो नित्याः पूजिताश्च विद्वान
 तः ॥ सर्वपापानि नश्यन्तु नैव यो वोनमो नमः
 अस्मद्देवी वणी कर्म नैव विपुजा विवेः परिपूर्ण
 : सन्ते ॥ पुनः देवेभ्यो पूज्या ॥ ३ ॥ ब्रह्म नर ॥ विष्णु वेश
 रुद्राय ॥ गणेशाय ॥ कार्तिकाय ॥ क्षत्रपालाय ॥
 योगिन्यै ॥ प्रजापतये ॥ इन्द्राय ॥ यमाय ॥ वरु

णाय ॥ कुबेराय ॥ अग्नये ॥ नैवेद्याय ॥ वायवे ॥
 इशानाय ॥ सनकाय ॥ सनन्दनाय ॥ सनत्कुमार
 य ॥ सनातनाय ॥ कपिलाय ॥ श्री सुराय ॥ बोट
 वेश ॥ पञ्चशार्णाय ॥ मरिचिभ्यो ॥ आत्रेयाय ॥
 अश्विनसे ॥ पुलस्त्याय ॥ पुलहस्त्याय ॥ ज्ञाते
 वे ॥ प्रचेतसे ॥ वशिष्ठाय ॥ भृगवे ॥ नारदाय ॥
 मार्कण्डेयाय ॥ ब्रह्मपानसपुत्राय ॥ धराय ॥ धुराय
 २ ॥ सोमाय ॥ अभ्यु ॥ अनिलाय ॥ अतलाय ॥
 प्रत्न्याय ॥ पुभासाय ॥ वसु ॥ अं अजेकपादाय
 २ ॥ अहिर्बुध्याय ॥ विरुपाक्षाय ॥ हराय ॥ यकु
 रूपाय ॥ त्र्यम्बकाय ॥ सुरेश्वराय ॥ सावित्राय ॥

जेयन्ताय २॥ पिनाकिने २॥ अपराजिताय २॥ रुद्राय २॥
 न्द्राय २॥ व्याघ्रे २॥ भगाय २॥ पूषाय २॥ मित्राय २॥ अ
 रुणाय २॥ अर्यमाय २॥ अश्वे २॥ वैवस्वते २॥ त्वष्टुः
 २॥ सवित्रे २॥ विभवे २॥ आदित्या २॥ इन्दवे २॥ चन्द्रा
 य २॥ निशानाथाय २॥ शीतान्शवे २॥ शशलाङ्गनाय
 २॥ मृगाक्ष्याय २॥ चन्द्राय २॥ सोमाय २॥ विश्ववे २॥
 ताराधिपतये २॥ शशिने २॥ औषधीशाय २॥ हि
 मांसये २॥ उदुपतये २॥ निशानाथाय २॥ शशक्षी
 य २॥ विष्णवे २॥ चन्द्राय २॥ नवग्रहपूजा ॥ अथाय २॥ ग
 हा ॥ योगेश्वराय २॥ वृक्षयोगेश्वराय २॥ महायोग
 ेश्वराय २॥ तिलकस्वामिने २॥ मन्त्रसे २॥ अनवे २॥
 मित्राय २॥ प्राणाय २॥ पराय २॥ धर्माय २॥ चित्तोः २

२॥ रुद्राय २॥ हंसाय २॥ नारायणाय २॥ विभवे २॥
 पुभवे २॥ साध्या २॥ प्राणाय २॥ अपानाय २॥ व्यानाय
 २॥ उदानाय २॥ समानाय २॥ चक्षुषे २॥ श्रोत्राय २॥
 रसाय २॥ घ्राणाय २॥ स्पर्शाय २॥ बोधाय २॥ मन्त्रः
 से २॥ त्रिषया २॥ अग्निदेवताये २॥ वातो २॥ सूर्यो ०
 २॥ चन्द्रो ० २॥ वसवो ० २॥ रुद्रो ० २॥ आदित्या ० २॥ म
 रूतो ० २॥ विश्वेदेवा ० २॥ वृक्षस्यति ० २॥ इन्द्रो ० २॥ वे
 रुणा ० २॥ अजिषि ॥ भूँ भूः २॥ भुवः २॥ स्वः २॥ मह
 : २॥ जनः २॥ तपः २॥ सत्यं २॥ गायत्री २॥ सावित्री
 २॥ सरस्वत्यै २॥ दशप्रणशिरसा ॥ भूँ शिष्याय २॥
 कल्याय २॥ व्याकरणाय २॥ निरुक्त्याय २॥ इन्दसे २॥
 ज्योतिषे २॥ वेदाय २॥ कलाय २॥ पातज्जेलाय २॥

अं धर्मा य २ ॥ शात्र कारा य २ ॥ उक्था य २ ॥ अत्युक्था
 य २ ॥ मध्यमा य २ ॥ प्रतिष्ठा य २ ॥ सुप्रतिष्ठा य २ ॥ मा
 य २ ॥ उभिष्टे २ ॥ अनुष्टुभे २ ॥ दृष्टे २ ॥ पंक्तौ २ ॥ त
 द्भे २ ॥ जगत्ते २ ॥ अतिजगत्ते २ ॥ संकेते २ ॥ अतिः
 संकेते २ ॥ अहो २ ॥ अत्यहो २ ॥ धृते २ ॥ अति धृते २ ॥
 छंदानी ॥ वेदग्वदा य २ ॥ अजुर्वेदा य २ ॥ सामवेदा य २ ॥
 अथर्वेदा य २ ॥ पृथिव्ये २ ॥ अज्जये २ ॥ अंतरिक्षा य २ ॥
 वायेवे २ ॥ दिवे २ ॥ सूर्या य २ ॥ दिग्भ्य २ ॥ चन्द्रमस २ ॥
 बुधगो २ ॥ हृन्दाभ्यो २ ॥ प्रजापतये २ ॥ देवेभ्यो २ ॥ वेदः
 षिभ्यो २ ॥ अजाये २ ॥ मेधाये २ ॥ सदसस्पतये २ ॥ अतु
 जाते २ ॥ वेदा ॥ ऋषिभ्यो २ ॥ समातना य २ ॥ शात्र कारा

२

य २ ॥ मनवे २ ॥ दिभिवे २ ॥ यमा य २ ॥ अंगिरसे २ ॥ वशिष्ठा
 य २ ॥ दक्षो य २ ॥ सम्यत्ता य २ ॥ शातातपा य २ ॥ परासरा य
 २ ॥ आपस्तम्भा य २ ॥ उत्तनसे २ ॥ व्यासा य २ ॥ कात्याय
 ना य २ ॥ बृहस्पत य २ ॥ गौतमा य २ ॥ भरद्वाजा य २ ॥ वि
 श्वामित्रा य २ ॥ जमदग्नि ये २ ॥ वशिष्ठा य २ ॥ काश्यपा य
 २ ॥ अत्रेये २ ॥ अरु-धृते २ ॥ शंखा य २ ॥ त्रिरियता य २ ॥
 हारिता य २ ॥ चासवे-का य २ ॥ मार्तण्डा य २ ॥ सालंका
 यना य २ ॥ साके-का य २ ॥ अगस्त्या य २ ॥ विश्वकर्म
 णो २ ॥ गार्गा य २ ॥ भार्गवा य २ ॥ माण्डव्या य २ ॥ शांदि-का
 य २ ॥ विश्रवसे २ ॥ कौत्सा य २ ॥ सौनका य २ ॥ मांग-का
 धौम्या य २ ॥ यथरी का य २ ॥ मनि का य २ ॥ कौशिकाः

य२ वात्सा य२ नेकु ग य२ लेमसा य२ कांठा
 य२ वैसम्पा य२ वादवी य२ मेंत्रा य२
 साके त्या य२ मय भृगा य२ वालिका य२
 वीधा य२ पिप्य सा य२ नृप य२ अश्विन्य२
 भरल्लै२ कर्त्तिका यै२ रोहिण्यै२ मृगशीर्षा यै२
 १ आश्लेष्ठा यै२ पुनर्वसु यै२ तिष्या य२ अश्लेषा
 य२ मघा य२ पर्वफागुण्यै२ उत्तरफागुण्यै२
 २ हस्ता यै२ चित्रा यै२ स्वात्यै२ विशाखा यै२ ॥ ५ ॥
 अनुराधा य२ ज्येष्ठा य२ मूला य२ पूर्वाषाढा य२
 १ उत्तराषाढा य२ अभिजिते२ श्रवणा य२

[illegible]

मेधा यः॥१२॥ रासिं पञ्चा॥ के शवादि द्वादश मूर्त
 यः॥ केतवे शः॥ दक्षा यः॥ वसुभ्योः॥ सत्या यः॥ क
 ला यः॥ कामा यः॥ पुरुरवा यैः॥ धनवे शः॥ रोच
 ना यः॥ दशदेवाः॥ आचार्या यः॥ पुनराचार्या
 यः॥ इतराचार्याभ्योः॥ अखस्थानेः॥ वले यः॥
 व्यासा यः॥ हनुमतेः॥ कृपा॥ मार्कण्डेया॥ पञ्चरा
 मा॥ विभिषणा॥ चित्तं जिह्वा॥ गन्धर्वभ्योः॥ निमि
 येभ्योः॥ प्राणिभ्योः॥ मुहूर्तभ्योः॥ द्युभ्योः॥ अ
 होरात्रेभ्योः॥ पक्षाभ्यां॥ मासेभ्योः॥ नेत्रेभ्योः॥
 सम्यत्सरभ्योः॥ पृथिव्यैः॥ अम्भ्योः॥ तेजसेः॥
 वायवेः॥ पंचभूताः॥ देव्यैः॥ गायत्र्यैः॥ सावेभ्योः॥ ११

सरस्वत्यैः॥ गंगायैः॥ यमुनायैः॥ श्रियैः॥ गौयैः॥
 मातृभ्योः॥ देव्यैः॥ अप्सराभ्योः॥ देवानुगायः॥ ना
 गेभ्योः॥ अनन्तायः॥ वाशुकेयैः॥ तक्षकायः॥ केके
 ढकायः॥ पद्मायः॥ महापद्मायः॥ संखपात्रायः॥
 कुलीकायः॥ नागाः॥ दक्षिसमुद्रायः॥ क्षीरसमु
 द्रायः॥ ईशसमुद्रायः॥ सरासमुद्रायः॥ क्षारसमु
 द्रायः॥ सिन्धुसमुद्रायः॥ सर्पिसमुद्रायः॥ सागराः॥
 जम्बुद्विपायः॥ शुषुद्विपायः॥ शाल्मलिद्विपायः॥ केश
 नौः॥ शोकः॥ पुष्करः॥ द्विपाः॥ मेरुपर्वतायः॥
 गन्धमादनः॥ मन्दिरः॥ कैलाशः॥ मलयः॥ हिमा
 लयः॥ विष्णुः॥ चित्रकूटः॥ श्रीपर्वतायः॥ पर्वताः॥
 तैलायः॥ वितरः॥ सुतलः॥ तैलातलः॥ नितलः॥ रसा

तत्सोय २॥ पातालो ३॥ पाताल ॥ ॐ भूर्भुवः ॥ भुवो
 लो ॥ स्वर्गो ४॥ मरु ४॥ जल ५॥ तप ५॥ सत्य ५॥ सारिः
 भ्यो २॥ मनुष्ये भ्यो २॥ सरिभृपे भ्यो २॥ विद्यायु २॥ भ्यो २॥
 मरुते भ्यो २॥ रक्षे भ्यो २॥ पिशाचे भ्यो २॥ गन्धर्वे भ्यो २॥
 किन्नरे भ्यो २॥ गुरुके भ्यो २॥ सिद्धे भ्यो २॥ पर्णे भ्यो २॥ भू
 ते भ्यो २॥ पुते भ्यो २॥ पशु भ्यो २॥ वनस्पति भ्यो २॥ ओ
 षधी भ्यो २॥ जरायुजे भ्यो २॥ उभूते भ्यो २॥ सिद्धे जैः
 भ्यो २॥ अष्टौ जै भ्यो २॥ भूतानि ॥ सनकाय २॥ सन
 देना ३॥ सनातना ३॥ कपिला ३॥ आसुराय २॥ वीर्यवे
 २॥ पञ्चशिखा ३॥ मरिच्ये २॥ अत्रये २॥ अंगिरसे २॥
 पुलस्त्या ३॥ पुलहा ३॥ केतवे २॥ पुचतसे २॥ वसिष्ठाय
 २॥ भृगवे २॥ नारदा ३॥ ३॥ मानसपुत्रा ॥ ५॥ पदाप

नैवेद्यादिकं निवेद्य गायत्री जपे ॥ स्तोत्र ॥ जीतम
 श्वभरदाजीविश्वामित्रस्तथैव च ॥ जमदग्निर्वसि
 ष्ठश्चक्रयपश्चात्त्रिवेच ॥ ययंसप्तषयो नित्या
 पूजिष्यविधानतः ॥ सर्वपापानि नश्यन्तु नृपयो
 वोनमो नमः ॥ ब्राह्मण पूजा ॥ शान्तिक पुष्पं गृहि
 त्वा ॥ स्वाध्यायं पठे ॥ इवेत्येतादिसंहिता पठे ॥ श्री
 गणेशाय ॥ हरिः ॐ ३ मरुमावेव जीतमभरदाजाः
 वयमेव जीतमो यन्मभरदाजः ५ इमावेव विश्वामि
 त्रौ यं मदग्नीः ५ अयमेव विश्वामि त्रौ यं यमदग्नि
 रिमावेव विश्वामि त्रौ यं यमदग्नि रिमावेव विश्वामि त्रौ यं
 यमदग्नि रिमावेव विश्वामि त्रौ यं यमदग्नि रिमावेव विश्वामि त्रौ यं
 यमदग्नि रिमावेव विश्वामि त्रौ यं यमदग्नि रिमावेव विश्वामि त्रौ यं

मन्त्रादत्रिरिति सर्वस्यान्ता भवति सर्वस्यान्ता भ
 तिसः एवं वेद ॥ अथ वधः समानम्यासाञ्जो
 वीपुत्रासाञ्जीवपुत्रो माण्डूकायणो माण्डूका
 यणो मीणव्यान्माण्डूक्यः कौत्सा कौत्सो माहिर
 धेर्महिरिथिर्विमकेक्षायणा दामकक्षायणोः
 वात्स्या द्यात्स्यः शाण्डिल्यः काण्डिल्यः कुश्लेः कु
 श्लिष्टः नवचसोरजस्तम्यायणा द्युत्तवचराज
 तम्यायणा सुरात्कावषेयानुरः कावषेयः पुजा
 पतेः पुजापतिर्वल्लो वल्लस्वयम्भुवल्लो नमः
 ॥ २ ॥ अथ वधस्तदिदं यदृशौर्षणा योऽहो

१३

प्यणायो गौतमाश्चैतमो वात्स्या द्यात्स्यो वात्स्या च पारा
 शर्या च पाराशर्यः साङ्ख्यः न्यायः च भारद्वाजी च भारद्वा
 जः ॥ औदकाहे श्य शाण्डिल्यः च शाण्डिल्यो वैजवापा
 च गौतमाश्च गौतमो वैजवापा यणाश्च वैष्टपुरेयः
 च वैष्टपुरेयः शाण्डिल्यः च रौहिणा यन्ताश्च रौहिः
 ण यनः शौनकाश्च शौनकाश्चैरेभ्याश्चैरेभ्यः पौति
 माष्या यणाश्च कौण्डिन्या यनाश्च कौण्डिन्या यनः ॥
 कौण्डिन्या कौण्डिन्यः कौण्डिन्या कौण्डिन्यः कौण्डि
 न्या कौण्डिन्यः कौण्डिन्या चाग्निवैश्या चाग्निवः
 श्यः ॥ ३ ॥ सैतवात्सेतवः पाराशर्या पाराशर्या जात
 कार्या जातकार्या भारद्वाजा भारद्वाजा भारद्वाः
 जात कार्या च गौतमाश्च गौतमो भारद्वाजा भारद्वा

जे वै जवापाय ना है जवापाय नः कौशिकाय नः कौ
 शिकाय निर्वृत कौशिकाय नः कौशिकः पाराशः
 र्यायाणा पाराशर्यायाणाः पायशर्यायाणाः पाराशर्या
 जीतु कायो जीतु कायो भारवाजा भारवाजा
 जीतु सुरायाणा चयास्का चयासुरायाणाः सेवेणिते
 पजं धने रौप्ये निरासुरे रासुरि भारवाजा भारवाः
 रवाजः आयेयातु ॥ ५॥ आयेया माते मणि जीतमा
 जीतमो जीतमा जीतमो वास्यादास्यः शाण्डिल्याः
 शाण्डिल्यः कैशोर्या काप्या कैशोर्याः काप्यः कै
 मारहारितात्कुमारहारितो गालवाफालकोविदो
 कौण्डिन्यादिदमी कौण्डिन्यावसनपातो वाभवाध
 सनपादाभवः पथसौभरात्पन्थासौभरो यो

१५

स्वादाभिरसादयास्यः आदिरसः आभते स्यादा
 दाभति स्यादा विद्युत्पात्तया द्वाविध्यरूपस्त्वा
 दुष्टिभ्यामश्विनौ दक्षी चः अथर्वणादव्यय
 धर्माधर्मादेवा दधर्मादेवा मृत्योः प्राच्ये सनात्
 त्पुः प्राच्ये सनात् पुष्टे सनात् पुष्टे सनात् पुष्टे सनात्
 कर्षे रैकर्षिर्षि प्रजिते रै प्रजिते रै प्रजिते रै प्रजिते रै
 रोः सनात् सनात् सनात् सनात् सनात् सनात् सनात् सनात्
 परमेस्थिनः परमेष्ठी वृत्तानो वृत्तानो वृत्तानो वृत्तानो
 गोनमः ॥ ५॥ अथर्वे शसादिदं दयं द्यौर्वाणा य
 द्यौर्वाणा यो जीतमो जीतमो वास्यादास्यो वास्यादे
 पाराशर्या च पाराशर्याः सार्वत्या च भारवाजा च भार
 रवाजः ओ उवाहे शशाण्डिल्या च शाण्डिल्यो वै ज

वापाञ्चगौतमाञ्चगौतमोर्वेजपावायणाञ्चवेष्टपु
 रेयाञ्चवेष्टपुरयःशाण्डिल्याञ्चरौहिणायनाञ्च
 रौहिणाञ्चनःशौनकाञ्चजैवनायनाञ्चरैभ्याञ्चरैः
 भ्यःपौतिमाष्यायणाञ्चकौण्डिन्यायनाञ्चकौण्डि
 न्यायनःकौण्डिन्याभ्यःकौण्डिन्याञ्चऔर्णभाभ्यः
 भ्यःऔर्णभाभ्यःकौण्डिन्याकौण्डिन्यःकौण्डिन्य
 कौण्डिन्यःकौण्डिन्याञ्चाग्निवज्रयाञ्च॥६॥अग्नि
 वेष्टमःसैतवासैतवःपाराशर्यापाराशर्याजातक
 र्ण्याजातकार्योभारद्वाजाभ्यःभारद्वाजाञ्च
 सुरायणाञ्चगौतमाञ्चगौतमोभारद्वाजाभ्यःभारद्वाजा
 वल्गुकाकौशिकावल्गुकाकौशिकःकाषायणा

१५

काषायणाःसौकरायणाःसौकरायणास्त्रैवोस्त्रैवणि
 रौपजन्मनेरौपजन्मनिःसायकायणाःसायका
 यणाःकौशिकायणाःकाशिकायनिर्घृतकौशिका
 घृतकौशिकःपाराशर्यायणाःपाराशर्यायणाः
 पाराशर्यापाराशर्याजातकर्ण्याजातकर्ण्याः
 भारद्वाजाभ्यःभारद्वाजाञ्चसुरायणाञ्चः
 यास्काञ्चसुरायणास्त्रैवोस्त्रैवणिरौपजन्मने
 रौपजन्मनिरासुरेरासुरिभारद्वाजाभ्यःभारद्वाजा
 आत्रेयात॥७॥आत्रेयोमातेर्मणिगौतमाञ्च
 तमोमौतमाञ्चतमोवास्यादात्मःशाण्डिल्याञ्चा
 ण्डिल्यःकेशीर्याकाप्याकेशीर्यःकाप्यःकुमार

हारिताकुमारहारितोगालवाङ्मालवोविदभीको
 णिउन्यादिदभीकोणिउन्यावत्सनेपातोवाभवाव
 सनपादाभुवःसोभरात्पन्याःसोभरोयास्यादा
 ङिरसादयास्यऽआङिरसऽआभतेस्वाद्यादा
 भेतिस्यादुोविश्वरूपात्याद्याद्विश्वरूपस्यादु
 श्विभ्यामश्विनौदयीचऽआथर्षणादप्यङ्ग
 थर्षणोथर्षणोदेवादथर्षादेवामृत्योःप्रादुष्टं
 सनान्मृत्युःप्रादुष्टंसनःप्रादुष्टंसनान्मृत्युःस
 नऽएकैर्षरुकाविर्विपुजितेर्विपुजितिर्यदेव्य
 ष्टिऽसनाराःसनारःसनातनात्सनान्नःस
 नेकात्सनेकःपरमेष्ठिनःपरमेष्ठीकृत्तणोवृत्तः१६

स्वयम्भुवृत्तणेनमः॥१८॥अथवयंशस्तदिदं
 वयम्भारवाजीपुत्राभारवाजीपुत्रोवात्सीमा
 एउवीपुत्रावात्सीमाएउवीपुत्रःपाराशरीपुत्रा
 त्पाराशरीपुत्रोगाजीपुत्राङ्गाजीपुत्रःपाराशरी
 कोडिनीपुत्रात्पाराशरीकोडिनीपुत्रोगाजीपु
 त्रगाङ्गीपुत्रोवाडेयीपुत्रावाडेयीपुत्रोमौषि
 कीपुत्रान्मौषिकीपुत्रोहारीकृष्णीपुत्राहारीक
 णीपुत्रोभारवाजीपुत्राभारवाजीपुत्रःपैङ्गी
 पुत्रापैङ्गीपुत्रशौनकीपुत्राशौनकीपुत्रः

२॥ काश्यपीवालाक्या माठरीपुत्रा काश्यपीवालाक्या
 माठरीपुत्रः कासीपुत्रो कोसीपुत्रो वीपुत्रादोः
 वीपुत्रः शालकायनीपुत्रा शालकायनीपुत्रो वा
 र्षगनीपुत्रा वार्षगनीपुत्रो गौतमीपुत्रा जौतमीपु
 त्रः आत्रेयीपुत्रा दात्रेयीपुत्रो गौतमीपुत्रा जौतमी
 पुत्रो वासीपुत्रा वासीपुत्रो भारवाजीपुत्रा भार
 वाजीपुत्रः पारासरीपुत्रा पारासरीपुत्रो वाकीरु
 णीपुत्रा वाकीरुणीपुत्रः आर्तभागीपुत्रा दार्तभा
 जीपुत्रः शौकीपुत्रा शौकीपुत्रः साकुतीपुत्रा साकु
 तीपुत्रः ॥१०॥ आलम्बीपुत्रा दा लम्बीपुत्रः आलम्बाय

१७

नीपुत्रा दा लम्बायनीपुत्रो जायनीपुत्रा जायनीपु
 त्रो माण्डकायनीपुत्रा न्याण्डकायनीपुत्रो माण्ड
 कीपुत्रा न्याण्डकीपुत्रः शाण्डिलीपुत्रा शाण्डिलीपु
 त्रो राधीतरीपुत्रा दाधीतरीपुत्रः कौशिकीपुत्रा
 भ्यापुत्रो श्रिकीपुत्रो वैदभतीपुत्रा वैदभतीपुत्रो
 भालुकीपुत्रा भालुकीपुत्रः प्राचीनयोगीपुत्रा न
 प्राचीनयोगीपुत्रः साञ्जीवीपुत्रा साञ्जीवीपुत्रः
 कार्षकेयीपुत्रा कार्षकेयीपुत्रः ॥११॥ प्राशनीपुत्रा
 दासरीवासिनः प्राशनीपुत्रः आसुरायणादासुराय
 णाः आसुरेरासुरिण्यात्तवल्याय सवल्याः उदाल
 काः उदालकाः सरणादरणाः उपवेद्रोरूपवेद्रिकाः श्रु

शिर्वाज श्रव सो वा ज श्रवा जिह्वा वतो वा व्यो गा जिह्वा
 वा न्वा व्यो गो सिता दार्ष गणाद सिता दार्ष गणो हरि
 तात्क श्य पाठ रित कश्यप शिष्या कश्यपा मिह्य
 कश्यप कश्यपानै कुवे कश्यपानै कुवि वा चो वा ग
 प्रिन्याद दिन न्या दित्यादा दित्यानी मानि शुक्लानि
 यज्ञं विद्या ज सने येन या सव ले ना रवा येने ॥
 १२ ॥ रति शत पठे शास्त्रो नृपिवंशानुकीर्तनं नाम
 स्वाध्याय ॥ अं वंशोक्तान् य सृप्य नृश ॥ रति तर्प
 यत ॥ तिरा च म्या ॥ मृषाभि मुरवः अं न हि वंश ॥ यव
 तवेदा त विदो वदन्ति परं प्रधानं मुरुषं तथा न्यविश्व

१८

अं ते कारणा मीश्वरा य तस्मै नमो विष्णु विनाशकाय
 अभिप्रेता र्थ सिध्यर्थं पूज्यते त्रिदशैरपि सर्व विष्णु
 हरे तस्मै गणाधिपतये ॥ संकल्प्य ॥ अथ वाक्य ॥ स्त्रा
 नपद्यति सत्य या तर्पनया य ॥ ॥ अपशवेन पित्रा
 दिमा क हयत ॥ पीतृस्तुते ॥ आकाशे पितृ व्याये ॥
 अं उदीरता मवरः ३ त्वरासः ३ मध्यमाः पितरः सो
 म्यासः ॥ असुयः ३ सुरकाः ३ नृते सो सो नो व नृ
 पितरो ह वै पु ॥ १ ॥ अं र सो नः पितरो नव गवाः ३ अ
 धर्वाणो भृगवः सोम्या सतेषा वयं ६ सुमतो यति
 या नाम पि भेदे सो मनसे स्थाम ॥ २ ॥ येनः पूर्व पित
 रः सोम्या सो नृ हिरे सो मपीधं मृषा सिद्धाः ॥ तेभिः

धर्मः सधरराणो हविः **ॐ** व्यशसुशब्दः प्रतिकाम
 मन्त्रः **॥२॥** त्वं सोमं पुच्छिदितो मनीषा त्वं **॥२॥** रजि
 षु मन्त्रे तेषि पन्था मन्त्रः **॥** तव पुणीतीतरा न **॥३॥** इन्द्रो देवे
 दराले मभजन्त धाराः **॥४॥** त्वं सोमं पितृभिः स
 मिदन्तो न द्यावापृथिवी **॥** आतर्तं धा **॥** तस्मै त **॥५॥**
 न्द्रो हविषा दिये मवय **ॐ** स्याम पतयोरयीनाम् **॥६॥**
 वहिषदः पितर **॥** अत्यवागिमा वो हव्या चरुमा जुषध
 मन्त्रः **॥७॥** आगता वसा सन्त मे नाथानः स्यात् **॥८॥** रपो दधा
 ते **॥** आहं पितृन् सुविद नार्द्र **॥** अविस्मि न पात अविक्क
 मणं च विष्मोः **॥** वहिषदा ये स्वध्या सुतस्य भजेते

१२

पितृस्त **॥९॥** इहा गमिष्ठाः **॥१०॥** उपहृताः पितरः सोम्या
 सोमवहिषेषु निविषु प्रियेषु **॥** त **॥** आगमन्ते त **॥११॥** ररु
 यत्यपि कुर्वन्त तव न्य स्मान् **॥१२॥** आयन्तु नः पितरः
 सोम्या सोम अग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः **॥** अस्मि
 न्यस्ते स्वध्या मदनो विक्रवन्ते ते वत्यस्मान् **॥१३॥**
 अग्निष्वात्ताः पितर **॥** एह गच्छत सदः सदते सुपुणी
 तयः **॥** मन्त्रो हवी **ॐ** विप्रयतानि वहिष्यथा सपध सर्व
 वीरं दधाते न **॥१४॥** वेह अग्निष्वात्ता येऽने अग्निष्वा
 तामप्येदिवः स्वध्या मादयन्ते **॥** तेभ्यः त्वरा उरुनी
 ति मेतां यथा वशीते न्येन्येन्ययति **॥१५॥** अग्निष्वा
 तान्ता मन्त्रो हवी महे नाराश **॥** ते सोमपीथं य **॥** आ

न

सुः॥ ते नो हि प्रा सः सुहृदा भवन्तु वयं स्याम पतये
 रयीणा म॥ पितृस्ते नो वा ह नो॥ कथं वा लो पूज्य॥
 ॐ कथं वा लाय नमः॥ पितृतीर्थे न जलां जलिते यंदे
 त॥ ॐ कथं वा न लोत्तप्यतां॥ सोमः ३॥ समः ३॥ अर्य
 माः ३॥ अग्निव्याताः ३॥ सोमपा पितरः ३॥ बर्हिपदः
 पितरः ३॥ समायः ३॥ धर्मराजायः ३॥ मृतव नमः ३॥ अ
 नेकायः ३॥ वैवस्वतायः ३॥ कात्यायः ३॥ सर्वभ
 तक्षयायः ३॥ ओदुम्बरायः ३॥ दध्रायः ३॥ नी
 लायः ३॥ परमेस्थिनेः ३॥ वृकोदरायः ३॥ चित्र
 येः ३॥ चित्रगुप्तायः ३॥ इति पुतिदेवतत्री स्त्री ज
 लां जलित्वा॥ अद्यत्यादि॥ अमुकगोत्रास्मि पितो

२०

वसुस्वरूपी मुकशार्मा तृप्यतामिदं सतिलजलं त
 स्मै स्वध्या नमः॥ एवं पितामहं प्रपितामहो॥ ३॥
 मुकगोत्रास्मा माता मुकदेवी तृप्यतामिदं सतिल
 जलं तस्मै स्वध्या नमः॥ ३॥ पितामहि प्रपितामहो॥
 ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः सोषाय नमो
 वः पितरा जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पि
 तरो योराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पि
 तरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो दे
 वैतदः पितरो वास॥ ॐ आधत्त पितरो गार्ध्वः मा
 रमुस्कर सुजम्॥ सथे ह पुरुषो सत्॥ ॐ ऊर्जम्

रुतीरमृतमृतमयः कीलालमपरिसृतम् स्वधाः
 स्थतर्पयतमेपितरं ॥ ॐ अं ओं हं मुं कं गं वाः स्मर
 मातामहवसुस्यरूपो मुकशर्मा तृप्यतामिदं सति
 लज्जलंतस्मै स्वधा ॥ सप्तगोत्रादिं तर्पयन्त्यष्टक
 मेन ॥ पितृवंसेत्यादि ॥ ॐ आं हुं क्ष्मं स्रं भ्रं पं यं त्रं दं
 वधि पितृमानवाः ॥ तृप्यन्तु पितरस्सर्वे ॥ मातृमा
 ता महादयः ॥ अतीतकुलं कोपीनां सप्तधीपतिव
 सिनां ॥ आवृत्तिभुवनं लोकानिदमस्तु जल्लो ॥ जैः
 सि ॥ शिवाय वा वायवाय वा अयजन्मनिवायवा
 ते प्रिमखिलायानुमदते नामुना सदा ॥ ॐ अं

कृष्णचूडायैवालायचगर्भादिनिस्तुताः॥अनवाप्रा
ग्नि संस्कारास्तेभ्योभूमौददाम्यहं॥येचास्माकं कलेति
॥सयाचम्या॥अस्मिजलेपस्मंलेखये॥चन्द्रनाक्षत्रे
नम्रजयत॥ॐ श्रीगणेशाय॥ॐ ब्रह्मणे॥ॐ ब्रह्मज
नानं॥विष्णवे॥विष्णोरात्मसि॥रुद्राय॥नमोस्तु
॥सर्वित्रे॥आरुह्ये॥मित्राय॥मित्रस्य चर्षणीकृतो
वोदेवस्य सानसि॥धुम्नचित्रस्तवस्तमम्॥वरुणाय॥
३ममेवरुण॥ॐ तत्सत्॥ॐ हृदयः सुचिषदसुरत्तरिक्ष
सद्योतावेदिषदतिथिर्दुरोणसत्॥नृषदरसदतस
द्योमसदद्वागोजाऽऽतजाऽऽदिजाऽतमृहत्॥स
य्यापस्थानप्रदक्षिणीकृत्य॥ॐ इत्याय॥अग्नये॥

यम॥ नैऋते॥ वरुणा॥ वायु॥ कुबेर॥ इशान॥ ब्रह्म॥ दि
 त्त॥ पृथिव्या॥ ओषधय॥ वाचे॥ वाचे॥ स्वस्ति॥ अं
 पित्रभ्यः स्वधा॥ मित्रभ्यः॥ इति मंत्रेन पूजयेत्॥ अथ पदी
 प॥ अं सम्यर्चसाधय सा सत्ते नृभिर गन्सहि मन
 सा सध शिवे न॥ त्वत्तां सुदत्रो विदधातुरा यो नृमाता
 त न्यो यद्विष्णु म॥ अं देवा गातुमिच्छा गातुमिच्छा म
 न सस्यत॥ इमे देव यस्तुं स्नाह वा ते ध्या॥ इति न सं
 मार्जनं॥ मम काले दीर्घमायुरस्तु॥ शान्तिरस्तु॥ पृष्टि
 रस्तु॥ वैष्टि रस्तु॥ यत्पापं प्रतिहृतमस्तु॥ यत्पापं वाशिष्ठः स
 नृ॥ आयुपुत्रां धनविद्या॥ यस्य स्मृत्या च नामोत्थान

२२

पो यस्तत्रिणादिषु॥ नृनं संपूर्णतां याति स ज्ञो वन्दे
 तमच्युतं॥ अच्युता यश्च॥ आवाहनेन जानामि॥ मः
 त्रहीनं॥ काय नवाचो॥ इति तर्पणविधिः॥ फलविष्णु
 आचम्य संकर्षणं॥ अथादि॥ अथ काश्रयपादिसप्रर्षीः
 एण मरुत्यो साहितानां सप्रचरासा मर्चनाव्यञ्जना
 सिद्धार्थं श्रावणसर्गकर्मो अं भूतपिशादीनां परः
 लविष्णुः श्राद्धमहं करिष्य॥ पूर्वमुर्या नगा यत्री जपे
 कृतां जलीययेत्॥ अं देवताभ्यः पितृभ्यश्च॥ ३॥ सप्तः
 व्याधाकृयारंभ्यः॥ कर्मपात्राणां॥ अं सद्देवा देवह॥ स
 दिदिवा सदिनक्रमेण सिचि क्रिमाद्यम॥ शयुमात
 स्मादेन सो विष्वा न्मुच्यते हंसः॥ यदि जाययदित्य

प्रसन्नापुंसि चक्रमावयम् ॥ सूर्यो मातस्मादेन सो वि
 श्वा न्मः श्रुत्येष्टं ह सः ॥ कर्मपात्रसाध्या ॥ ॐ इव न्मेव स
 ए ॥ जल ॥ श्रुतिः श्रुतिः श्रुतिः श्रुतिः अक्षन् अक्ष
 ६ पवित्रे स्थो पवित्रे गन्धे द्वा रां च न या फल नी
 पुष्प पूजन ॐ ब्रह्मणे रविभ्यश्च रुद्राय नमः सदा सिव
 यत्र पवित्रे न जेते वर्तन ॥ गंगा ये रजमुनी सरस्वती
 आकाश नी आत्मपूजा ॥ कर्मपात्रो देके न सर्वव
 त्तु आत्मा नो सि च ॥ अपवित्रेति ॥ दक्षिणा मुखे
 न पिण्डासनं ॥ अमुकगोत्रा स्मत्पितादीनां मुकश
 र्माणां सपत्निका नां इदमवने जलं पिण्डासनं वः स्व
 ध्या ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथा मुकगोत्राः स्मत्पि

२३

तर मुकशर्मनरतत्फलममृतस्वरूपं ते स्वधा ॥ सर्व
 पिण्डाद्यान्नाहृतपुष्पाद्या च म्या ॥ मातृक सहितेति त्र
 दकं देत ॥ अथा मुकगोत्रा अस्मत्पितरो मुकशर्माणा
 : सपत्निका इदं पुण्यवने जलं वः स्व ध्या ॥ च न्द न पुष्प
 धूपदीपैश्च यथा फलां सहिते पूजन ॥ अथा मुकगोत्रा
 स्मत्पितरो मुकशर्माणाः सपत्निका एतान्यर्चनाः
 त्रगन्धपुष्प धूपदीपैर्वेद्यादि नियमभ्यस्य ध्या
 तो सर्वं परिपूर्णं मस्तु ॥ सोम ॥ ॐ पिता महेश्वर
 धैव प्रपिता महाः ॥ तृप्तिं प्रयान्नुपिणो नमसादत्ते न भू
 तले ॥ पिता महस्तु तिसृपेति तस्य पिता च तस्य प्रापि
 ता महेश्वर ॥ तृप्तिं विनश्यन्ति च यातु ध्या ना विश्वे च

देवाः परमां प्रयाति ॥ यत्ने श्वरो ह्यसमस्तकथ्यभोः
 ततो तथात्तामहदीश्वरो व ॥ तत्सन्निधा नादपया
 तिसर्वैरक्षां स्थोषाण्यसुराण्यसौख्यम् ॥ मंत्रहीनं
 क्रियाहीनं भक्तिहीनं तथैव च ॥ तदस्तु सर्वसम्प
 ण्नमस्तौ पितृदेवता ॥ पितरो वसवो ज्ञेयारूढा चैव
 पितामहाः ॥ पुपितामहा तथा दित्याश्रुतिरेकासः
 नातनी ॥ अत्र गंधादि ॥ रसिगा ॥ पिण्डविस्मर्जना ॥
 ॐ वाजे वाजे वत वाजिनो नो धनेषु विप्राः ॥ अमृताः ॥
 वेदतेजाः ॥ अस्य मध्वः पिवत मादयध्वं नृपायात

२५

पथिभिर्देवयानैः ॥ पितृ नरत्प्रां या नृ ॥ इति ऋषि
 शार्ङ्गफलपाण्डविधि ॥ तिलघृतसमिध ॥ धानास
 मिधघृतज्येस्थक्रमेण जुहुयात् ॥ ॐ शुक्रज्योः
 तिश्च विद्युज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिश्चार्ति
 श्च ॥ शुक्रेश्च ॥ नृतेपाश्चात्ये ६ हाः ॥ १ ॥ इदं शुक्र
 दृष्टं सदृष्टं पृथित्सदृष्टं ॥ मितश्च सममितश्च सभ
 रा ॥ २ ॥ नृतेश्च सत्येश्च कुर्वेश्च धराणाश्च धर्माः
 च विद्युर्त्ता च विद्यारयः ॥ ३ ॥ नृते जिह्व सत्यजि
 ह्व सन जिह्व सत्येश्च ॥ अतिमित्रश्च दूरेऽमृत
 श्च गणाः ॥ ४ ॥ इदं क्षासऽरतादृक्षासऽरुपाः

सदृक्षातः प्रति सदृक्षा स एत नमिताश्च समिता
 सो अद्य सभरसो मरुतो यज्ञे अस्मिन् ॥ ५ ॥ स्यत
 वांश्च पृथा सीवशा तपनश्च गृहमेधी च ॥ कीठी च
 शावी चीर्जोषी ॥ ६ ॥ इन्द्रदेवी विंशो मरुतो नुवत्करीः
 नो भवन् ॥ रवमिमं यजमानं देवाश्च विंशो मानुषी
 श्चानुवत्करी नो भवन् तस्या हा ॥ १८ मरुत्यानां ॥
 धाता हो मा ॥ अंधा नाः केरम्मः सक्ते वः परी वापः पयो
 दधि ॥ सो मस्य रूपं हविष आ मिक्षा वा जिनम्भ
 व्यु ॥ धा ना नाष्टं रूपं वलम्परी वापस्य गोधूमाः
 सक्ते नाष्टं रूपं वदरम्परी वापाः केरम्मस्य ॥ पयः
 सो रूपं यद्वा दक्षी रूपं ॥ १९ ॥ इन्द्रदेवी नि। सो

मनश्चरुपंधाजिन ६ लौम्यस्य रूपमामिक्षा ॥ ॐ स
दसस्यतिम ६ तमिपुयमि नुस्यकाम्यम् ॥ समिः
मेधामयामिषि ६ स्याहा ॥ इदंसदसस्यतेयेत्याग
ॐ समिधामि नुवस्यति ॥ अथ क्रमेण चतुर्गुण
३॥ शांति कपुष्टिक ॥ सहातं अग्निं विसर्जे ॥ स
पुनरेष वि सर्जे ॥ अथ विष विवेन अभिषेक ॥
ॐ देवस्यत्या ॥ अश्विनो भैषज्यन ॥ पाशाशंभव
ति ॥ अथ विष विवेन दिग्वाहय ॥ ॐ समुद्रं गत्व हा
नरिक्षंग ६ देव ६ सवितारंग ६ मित्रावरुणौ ग

इस्याहोरात्रे गङ्गा • इत्याहुं सि गङ्गा • आवाप
थिवी गङ्गा • मत्स्य गङ्गा • सोम गङ्गा • दव्यं न भोगङ्गा •
दिनये व्यानर गङ्गा • म नो मे हादि गङ्गा दिवते स्वः
मा गङ्गा तु स्वर्ग्येतिः पृथिवी भस्मे नापृणा त्याहा

केलशाभिषकादि आसिर्वा दपुर्ज्यता सादि

अस्मद्वावरागी कर्म कलशादि नेष्टि पृजा संपूर्णा
साक्षिणो श्री सूर्यो चार्च्यं ॥ कौमारी विमर्जने ॥

सर्वमङ्गल ॥ संतरु मिति श्रावणा शुदि २ री ५ शु या
भे श्री नरिन्दराज्ये नलिपितं पुस्तकं समाप्त भूभ